National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 24-02-2025, Accepted: 25-03-2025, Published: 09-04-2025
Volume 10, Issue 2, 2025, Page No. 1-2

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों का भारतीय शिक्षा में योगदान

मोनिका वर्मा[1], डॉ. एस. पी. द्विवेदी[2]

[1] शिक्षा विभाग, श्री पी. एल. मेमोरियल पीजी कॉलेज, सागर परिसर, बाराबंकी, स्मबद्ध डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] प्रोफेसर, प्राचार्य, शिक्षा विभाग, श्री पी. एल. मेमोरियल पीजी कॉलेज, सागर परिसर, बाराबंकी, स्मबद्ध डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत प्रपत्र मे बाल गंगाधर तिलक के जीवन परिचय उनकी शिक्षा तथा तिलक का समाज और शिक्षा में योगदान का वर्णन किया गया है। इन्होंने समाज में फैली कुरीतियों जैसे बाल विवाह, सती प्रथा ,जमीदारी प्रथा का विरोध करने के साथ ही अंग्रेजी शिक्षा का भी विरोध किया। इन्होंने अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के साथ–साथ छात्र–छात्राओं के लिए मुफ्त शिक्षा व मुफ्त पुस्तक वितरण की भी सिफारिश की।

मूल शब्दः बाल गंगाधर तिलक, शिक्षा, भारतीय समाज में योगदान

बाल गंगाधर तिलक का मुख्य कार्य समाज में फैली कुप्रथाएँ (बालविवाह, सतीप्रथा, जमीदारी प्रथा) के घोर विरोधी थे। उन्होंने समाज में फैली इन कुप्रथाओ को दूर करने के लिए समाज को शिक्षित होना अति आवश्यक है अतः इन्होने समाज की प्राथमिक शिक्षा पर अधिक महत्व दिया। बाल गंगाधर का मानना था कि यदि प्राथमिक शिक्षा छात्रो की ठीक हो तो छात्र अपने जीवन का निर्माण ठीक तरह से कर सकते है जैसे यदि मकान की नींव ठीक हो तो उस पर कितनी भी मंजिल बनाई जा सकती है उसी प्रकार यदि विद्यार्थी की प्रारम्भिक
शिक्षा ठीक है तो उसे आगे की शिक्षा या समाज में परेशानियां नही आती है।

जीवन परिचय

बाल गंगाधर का जन्म 23 जुलाई 1856 ब्रिटिश समय में महाराश्ट्र के एक छोटे से गाँव चिखली में हुआ था। बाल गंगाधर तिलक के पिता का नाम श्री गंगाधर तिलक और माता का नाम पार्वती बाई गंगाधर था। बालगंगा पर के पिता एक संस्कृत अध्यापक थे। इनकी माताजी का दहे ान्त बचपन में ही हो गया था। इनकी पत्नी का नाम तापी था। लेकिन नये सुधारों को निर्णायक दिशा देने से पहले ही 1 अगस्त, 1920 ई. को बम्बई में उनकी मृत्यु हो गयी। मरणोपरान्त श्रद्धाञ्जलि देते हुए गान्धी जी ने उन्हें आधुनिक भारत का निर्माता कहा और जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय क्रान्ति का जनक बतलाया बाल गंगाधर अंग्रेजी शिक्षा के ये घोर आलोचक थे और मानते थे कि यह भारतीय सभ्यता के प्रति अनादर सिखाती है।

शिक्षा

पुणे के डेक्कन कॉलेज से गणित में कला स्नातक सम्मान के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने एलएलबी कार्यक्रम में दाखिला लेने के लिए सेमेस्टर के बीच में अपना एमए कार्यक्रम छोड़ दिया और 1879 में सरकारी लॉ कॉलजे से एलएलबी की डिग्री हासिल की। उनका उद्देश्य भारतीय समाज को समुचित शिक्षा प्रदान करना। उन्होंने समाज को शिक्षा देने के लिए प्राइवेट स्कूल खोलने का निश्चय किया उनका प्राइवेट स्कूल खोलने का मुख्य उद्देश्य था कि हर समाज को आत्म निर्भर बनाना था। राष्ट्रीय शिक्षा देने के लिए उन्होंने जिस पाठ्यक्रम का निर्माण किया वह व्यवहारिक और देशवासियों के लिए सहायक था। ऐसे पाठ्यक्रम में उन्होंने औद्योगिक एवं प्राविधिक शिक्षा को स्थान देने की बात कही थी। राष्ट्रीय शिक्षा पर भाषण के समय तिलक ने कहा था कि औद्योगिक शिक्षा देना हमारी शिक्षा नीति का तीसरा घटक होगा।बाल गंगाधर तिलक ने भारतीय समाज के लिए 24 अक्टूबर 1884 को डेक्कन एजुकेशन सोसायटी की स्थापना की जिसमें उनके मुख्य सहपाठी आगरकर थे। 2 जनवरी 1885 को फर्ग्यूसन कॉलेज की स्थापना की इस कॉलेज में बाल गंगाधर तिलक स्वयं गणित और संस्कृत का अध्ययन कराते थे। तिलक की सोच थी कि स्वदेशी समान को अपनाने के लिए पहले लोगों भी सोच को बदलना होगा शिक्षण की यह प्रेरणा बाल गंगाधर तिलक को बाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी से मिली। गणतन्त्र भारत में अनिवार्य शिक्षा सभी वर्गों के लिए अपनायी जाने लगी परन्तु हमारे शिक्षा शास्त्रीयों ने यह नहीं सोचा कि जिसको आज हम भारतीय मे अपनाने के लिए जा रहे हैं वह अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा.

1880 को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने पहले ही दे दी। शिक्षा में योगदान

बाल गंगाधर का मानना था कि यदि प्राथमिक शिक्षा छात्रो की ठीक हो तो छात्र अपने जीवन का निर्माण ठीक तरह से कर सकते है जैसे यदि मकान की नींव ठीक हो तो उस पर कितनी भी मंजिल बनाई जा सकती है उसी प्रकार यदि विद्यार्थी की प्रारम्भिक शिक्षा ठीक है तो उसे आगे की शिक्षा या समाज में परेशानिया नही आती है। लोगों को एकजुट करने के अपने प्रयासों के अलावा, तिलक ने सामूहिक राष्ट्रीय चेतना पैदा करने में शिक्षा के महत्व को भी पहचाना। उन्होंने सभी के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा की वकालत की, जनता के उत्थान और राजनीतिक रूप से जागरूक नागरिक तैयार करने में शिक्षा के महत्व पर जोर दिया। गंगाधर तिलक का मुख्य कार्य समाज में फैली कुप्रथाएँ (बालविवाह, सतीप्रथा, जमीदारी प्रथा) के घोर विरोधी थे। उन्होंने समाज में फैली इन कुप्रथाओ को दरू करने के लिए समाज को शिक्षित होना अति आवश्यक है अतः इन्होने समाज की प्राथमिक शिक्षा पर अधिक महत्व दिया। बाल गंगाधर तिलक के कुछ प्रमुख सामाजिक योगदान इस प्रकार हैं।

1. **स्वराज्य पर अग्रणी–** बाल गंगाधर तिलक ने भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और जनता का समर्थन जुटाया।

2. **शिक्षा के प्रति जागरूकता–** वे अपने समाज में शिक्षा के महत्व को फैलाने में सक्रिय रहे और जनता को जागरूक किया।

3. **समाज में स्थान और अधिकार–** बाल गंगाधर तिलक ने सामाजिक असमानता और अधिकारों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और उन्होंने समाज मे ंस्थान आरै समानता के लिए प्रेरित किया।

4. **राष्ट्रीय एकता–** उन्होंने भारतीय समाज को एकजुट करने और एक महान राष्ट्र बनने की दिशा में काम किया।

तिलक और शिक्षा–

"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और में इसे लके र रहूँगा" की उद्घोषणा करने वाले तिलक भारतीय स्वतंत्रता सग्रांम के प्रमुख क्रांतिकारियों में अग्रणी हैं। स्वतंत्रता, स्वराज्य और स्वदेशी को परिवर्तन का केंद्र बिन्दु मानने वाले तिलक के विचारों में इतनी ज्वाला थी कि विदेशी लेखकों नेतिलक को 'भारतीय अशांति का जनक कहा। प्रबुद्ध चिंतक और विचारक तिलक इस बात को बहुत अच्छी तरह समझते थे कि जब तक भारत स्वतंत्र नहीं होगा, स्वदेशी नहीं अपनाएगा, भारत और भारतीयों का उत्थान संभव नहीं है। 1856 में महाराष्ट्र के रत्नागिरि स्थान पर जन्मे बाल गंगाधर तिलक को 1897 में अंग्रेजों द्वारा राजद्रोह का मुकदमा दर्ज कर जेल भेजा गया। राष्ट्रभक्ति के कारण तिलक के जेल जाने से सामान्य भारतीयों में तिलक की प्रतिष्ठा स्थापित हुई और इन्हें लोकमान्य कहा जाने लगा।

भारत की स्वतंत्रता को सर्वोच्च लक्ष्य मानने वाले तिलक भारतीय क्रांतिकारियों के लिए प्रमुख आदर्श थे। महात्मा गाँधी ने तिलक को आधुनिक भारत का निर्माता' तथा पंडित नेहरू ने भारतीय क्रांति के जनक' का नाम दिया। बाल गंगाधर तिलक उन विचारकों और चिंतकों में से थे जो अत्यंत दूरदृष्टि रखते थे तथा समग्रता और व्यापकता के साथ देश के भविष्य की कल्पना कर सकते थे। आदर्श भारत की उनकी संकल्पना में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान था। शिक्षा के प्रति आग्रही तिलक तत्कालीन भारत में प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा से असंतुष्ट थे। उनके शिक्षा संबंधी विचार अध्ययन, शोध, विश्लेषण तथा जानने की दृष्टि से भारतीयों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

बाल गंगाधर तिलक के अनुसार शिक्षा का कार्य तथा उद्देश्य केवल साक्षरता प्रदान करना नहीं है बल्कि हमारे प्राचीन ज्ञान व सांस्कृतिक मूल्यों को समाज की नवीनतम और युवा पीढ़ी के विचारों और जीवन शैली में समाहित कर ऐसा परिवर्तन लाना है जिससे हमारे समाज और राष्ट्र का जागरण और पुनर्निर्माण संभव हो सके। शिक्षा एक और मनुष्य के भौतिक जीवन यापन में सहायक है तो दूसरी ओर राष्ट्र की प्रतिष्ठा और संपन्नता में वृद्धि का कारक भी है। तिलक का मत था कि देश में शिक्षा सर्व सुलभ होगी तो प्रत्येक समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित हो सकेगा और भारतीय राजनीति या भारतीय समाज मे ं अपना योगदान दे सकता है जिससे यह रहे कि भारतीय शिक्षा में सभी लोगों का समान योगदान है। विद्यार्थी का चरित्र निर्माण, तिलक की दृष्टि में शिक्षा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण लक्ष्य था। उनका मानना था कि विद्यार्थी के चरित्र निर्माण से ही श्रेष्ठ नागरिक और श्रेष्ठ नागरिकों के समुच्चय से ही श्रेष्ठ समाज व राष्ट्र का निर्माण होगा। वे इस बात से भली–भांति परिचित थे कि अगर भारत को पुनरू सोने की चिड़िया बनाना है तो युवा वर्ग को न केवल आत्मनिर्भर होना होगा बल्कि उनका चरित्र भी समोन्नत होना चाहिए। विद्यार्थी ही देश का भविष्य हैं इस उक्ति को स्वीकारते हुए उन्होंने शिक्षा के माध्यम से युवा वर्ग, विशेषकर विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। लोकमान्य तिलक का मानना था कि भारतीयों के लिए विकसित शिक्षा प्रणाली में जो अंग्रेजी का प्रभाव और बाध्यता है वह सम्भवतरू विश्व में किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली में नहीं है। पराजित मानसिकता के कारण अंग्रेजी जानने वाले लोगों को ही शिक्षित मान लेना, तिलक की दृष्टि में अस्वीकार्य था। वे मातृभाषा में शिक्षा के पक्षधर थे। उनका मानना था कि जो शिक्षा मातृभाषा में विद्यार्थी आठ–दस साल में पा सकते हैं, विदेशी भाषा में उसी शिक्षा को प्राप्त करने में बीस–पच्चीस वर्ष लग जाते हैं। अतरू विद्यार्थी और शिक्षा प्रणाली के लिए मातृभाषा में शिक्षण ही लाभकारी है, तिलक की ऐसी मान्यता थी। यहाँ यह ध्यान करना आवश्यक है कि वे एक भाषा के रूप में अंग्रेजी के विरुद्ध नहीं थे, लेकिन अंग्रेजी को बाध्य बनाने और उसके कारण भारतीयों में उपजी हीन भावना के विरुद्ध थे।

निष्कर्ष

तिलक एक प्रमुख क्रांतिकारी नेता थे जो देश के लिए स्वराज चाहते थे। शिक्षा प्रणाली में उनके योगदान और विभिन्न शिक्षा संस्थानों की स्थापना ने देश में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाल गंगाधर ने अपने जीवन में कठिन परिश्रम करते हए समाज में फैली हुयी बुराइयों के खिलाफ अनेक कदम उठाये लेकिन कुछ स्वार्थी राजनीतिज्ञ लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए तिलक द्वारा उठाये गये कदमों का सहयोग ठीक से नही किया अगर सभी राजनीतिज्ञ लोग तिलक का सहयोग ठीक से करते तो भारतीय समाज की तस्वीर बदलने मे देर नहीं लगती।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गायत्री पगड़ी, लोक मान्य तिलक, क्रियटिव मीडिया, अहमदाबाद
2. सचिन सिंघल, बाल गंगाधर तिलक, प्रभात प्रकाशन, पूना
3. जे. पी. जैन, विनोद तिवारी, बाल गंगाधर तिलक, उत्कर्ष प्रकाशन, मेरठ, यूपी
4. प्रो. रमन बिहारी लाल, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्र के सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
5. मनोज तिवारी, बाल गंगाधर तिलक, मनोज पब्लिके ान, नई दिल्ली
6. बृजभूषण शर्मा, शैक्षिक समाज विज्ञान, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, मेरठ
7. एन आर सक्सैना, डा. शिखा चतुर्वेदी, उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ